बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के राष्ट्रवाद एवं पाश्चात्य राष्ट्रवाद में वैचारिक असमानता

भरत कुमार शर्मा[1] प्रो. ए.के. सिंह [2]

सारांश :– प्रस्तुत लेख में पाश्चात्य राष्ट्रवाद तथा भारतीय राष्ट्रवाद को स्पष्ट किया गया है। वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने पाश्चात्य राष्ट्रवाद को घोर स्वार्थी, नग्न तथा शोषणकारी कहा वहीं पाश्चात्य राष्ट्रवाद के विरूद्ध अपने साहित्य में भारतीय राष्ट्रवादी चेतना को जागृत करने का कार्य किया है। 'संवाद प्रभाकर' एवं 'संवाद कौमुदी' से की गयी साहित्यिक यात्रा की शुरूआत को विश्लेषित करते हुए 'इण्डियन फील्ड' में प्रकाशित प्रथम उपन्यास 'राजमोहनज वाइफ' को उद्घृत किया है। लेख अन्तर्गत उपन्यास' दुर्गेश नन्दिनी', 'कपाल कुण्डला' तथा 'मृणालिनी' को यथा विश्लेषित किया गया है, तथा लेख में पाश्चात्य विचार धारा के स्वार्थी तथा शोषणकारी स्वरूप को प्रदर्शित कर भारतीय राष्ट्रवाद को मानवता से परिपूर्ण तथा नैतिक मूल्यों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। लेख में शब्दाबली को पुष्ट एवं प्रमाणिक आधार प्रदान करते हुए संदर्भित ग्रथों का हवाला देते हुए मौलिकता प्रदान की गयी है।

प्रस्तावना :– प्रस्तावित लेख में वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के राष्ट्रवाद एवं पाश्चात्य राष्ट्रवाद के मध्य वैचारिक असमानता संदर्भित विचार का प्रस्तुतीकरण है लेख में वंकिम की साहित्य यात्रा , समृद्धता तथा राष्ट्रवाद एवं पाश्चात्य राष्ट्रवाद के मध्य असमानता को प्रदर्शित किया जाना अपेक्षित है। लेख में भारतीय राष्ट्रवादी नैतिक मूल्यों एवं पाश्चात्य राष्ट्रवादी वैचारिक दर्शन को स्पष्ट किया जाना सुनिश्चित है। विभिन्न विद्वान विचारकों के विचारों को यथा विश्लेषित किया जाना अपेक्षित है। लेख में वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा जागृत की गयी राष्ट्रवादी चेतना को परिलक्षित किया जाना है।

परिचय की दृष्टि से वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय :–

वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा सृजित साहित्य राष्ट्रवादी भावना से ओत –प्रोत है। तात्कालिक विषम परिस्थितियों में जब ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य अपनी साम्राज्य विस्तार वादी नीति का घोर स्वार्थी एवं शोषणकारी नीति का सफल संचालन कर रहा था तथा भारतीय मिथकों को तोड़ने, उन्हें ध्वस्त करने का कार्य कर रहा था तब ऐसे में जरूरत थी कि उन मिथकों को कैसे सुरक्षित रखा जाय जो हमारी सांस्कृतिक एवं एतिहासिक पहचान हैं। इन विषम परिस्थितियों में यह बात आम जनमानस तथा हमारे युवाओं को कैसे बताई जाय तथा यह एक राष्ट्रवादी आंदोलन बन पाये और ब्रिटिश हुकूमत को भारत से खदेड़ दिया जाय। ऐसे में वंकिम चन्द्र ने उपन्यास 'त्रयी' के माध्यम से भारत को एक जीवंत संदेश दिया और भारतीय जनमानस ने भारत माता को आजाद कराना अपना फर्ज समझते हुए प्राणों को न्योछावर कर देने में गुरेज महसूस नहीं किया।

वंकिमचन्द्र का संदेश ' माता भूमि पुत्रोऽहं प्रथिव्याः ।''

उपरोक्त वेद वाक्य का शाब्दिक अर्थ राष्ट्रवादी मान्यता को प्रदर्शित करता है। कि भूमि हमारी माता है और हम इस धरती के पुत्र हैं।[1] विष्णु पुराण में धरती से मानव सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हुए विष्णु पुराण में कहा गया है।

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपो महागुने।

यतोहि कर्म भूरेषा ह्यतोऽन्या भोग भूमयः।।

अत्र जन्म सहस्रणां सहस्रैरपि उत्तम।

कदाचिल्लयते जन्तुर्मानुष्यं पुण्य संचयात।।[2]

वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का प्रारम्भिक जीवन एक प्रशासनिक पदाधिकारी के घर व्यतीत हुआ। आपका जन्म 26 जून 1838 को बंगाल के 'नेहाटी' जनपद के 'काटलपाड़ा' ग्राम में हुआ । पिता यादव चन्द्र 'मिदनापुर' के जिलाधीश अर्थात् डिप्टी कलेक्टर थे। पिता स्वभावगत सन्त व मनीषियों के सम्पर्क में अपनी सेवा के बाद का समय व्यतीत करते थे, जिसका प्रभाव वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के जीवन पर पड़ा। वंकिम चन्द्र की प्राथमिक शिक्षा मिदनापुर के कलेजियट स्कूल में, तथा 1849 में हुगली कालेज में प्रवेश लिया। तत्पश्चात 1858 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि धारण की। 7 अगस्त 1858 में बंगाल के एक जिले में जिला कलेक्टर बने। 1869 में प्रेसीडेन्सी कालेज से बी.एल. अथवा कानून की उपाधि धारण की। 1849 में 5 वर्ष की कन्या के साथ 11 वर्ष की उम्र में दाम्पत्य जीवन में बंध गये। प्रथम पत्नी मरणोपरान्त 1860 में आपका विवाह 'हालिशहर' की 'राजलक्ष्मी' के साथ हुआ। दोनों के दाम्पत्य जीवन से तीन कन्याएं प्राप्त हुई।

अपनी साहित्यक यात्रा का प्रारम्भ करते हुए 1853 से 1856 के बीच उनकी अनेकों गद्य व पद्य कृतित्व कविवर ईश्वरचन्द्र गुप्त जी की 'संवाद प्रभाकर' तथा 'संवाद साधुरंजन' नामक पत्रिकाओं में छपे। प्रथम उपन्यास 'राजमोहनज वाइफ' धारावाहिक रूप में 1864 में 'इंडियन फील्ड' में प्रकाशित हुआ। 1865 में 'दुर्गेश नन्दिनी' तथा 1866 में 'मृणालिनी' प्रकाशित हुआ। अन्य उपन्यासों के लेखन तथा प्रकाशन के उपरान्त वंकिम चन्द्र का श्रेष्ठतव भारतीय मानस पटल पर सदैव के लिए अंकित हो गया।

पाश्चात्य दर्शन के विरूद्ध वंकिमचन्द्र का वैचारिक दर्शन –

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में बंकिम के राष्ट्रवादी विचारों का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने वैचारिक दर्शन में उन्होंने सनातन राष्ट्र की ऐतिहासिक परम्पराओं तथा आधारों का सम्यक विवेचन प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं तार्किक अवधारणा प्रस्तुत की।

मजूमदार ने बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के राष्ट्रवाद पर अभिमत प्रस्तुत किया कि '' बंकिम ने राष्ट्रवाद के दार्शनिक पक्ष का बड़े ही मनोयोग से विस्तृत विश्लेषण किया है।[3]

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय की राष्ट्रवाद सम्बन्धी अवधारणा पश्चिमी राष्ट्रवाद के समर्थन मे नहीं थी। आधुनिक पुनर्जागरण के अग्रदूत राजाराम मोहन राय के विपरीत बंकिम बाबू ने अपना विचार दर्शन प्रस्तुत किया। जहां राजाराम मोहन राय ने भारत सहित एशियायी राष्ट्रवाद को यूरोपीय राष्ट्रवाद सम्बन्धी अवधारणा का पर्याय बताकर उसके विश्वव्यापी स्वरूप पर बल दिया, जबकि बंकिम चन्द्र ने यूरोपीय राष्ट्रवाद को घोर अमानवीय, नग्न एवं स्वार्थी राष्ट्रवाद माना। जो दूसरे राष्ट्रों के शोषण तथा उसकी अपनी मंगल कामना पर आधारित है। वह स्व प्रगति और उत्थान का पोषक है। उनका अभिमत था यूरोपीय राष्ट्रवाद के अभ्युदय ने अनगिनत बार मानव जाति को युद्ध की विभीषिका में झोंक देने का गर्हित पाप किया है।[4]

यूरोपीय अथवा पाश्चात्य राष्ट्रवाद पर अपने विचार व्यक्त करते हुए 'भारत कलंक' नामक अपने लेख में लिखा है '' इस प्रकार की मनोवृत्ति का निष्पादन शुद्ध भाव कहकर स्वीकार नहीं की जा सकती। इसमें भारी दोषपूर्ण विकार हैं। इस विचार से राष्ट्र के सर्वसाधारण व्यक्ति को ऐसी भ्रान्ति हो सकती है। कि परायी जाति के मंगल मात्र से अपना अमंगल होता है। इसी कुसंस्कार के वशवर्ती होकर यूरोपीय राष्ट्रों ने अपने दुःख भोगे हैं और अनेक बार युद्ध की अग्नि में दग्ध हुए है। ''

बंकिम के कथन से स्पष्ट है कि अपने राष्ट्र के हितों का संवर्द्धन तथा अन्य राष्ट्र के हितों से उनका प्रयोजन, अपने राष्ट्र के क्षुद्र स्वार्थी हितों को वरीयता देकर अन्य राष्ट्र के हितों की उपेक्षा करना अथवा अन्य राष्ट्रों का शोषण करके अपने राष्ट्र को अन्य राष्ट्रों की तुलना में उसी भांति प्रिय समझना था, जिस तरह एक बालक स्वमाता से लगाव रखता है।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का राष्ट्रवाद नैतिक मूल्यों में समन्वित है जो आत्म संतुष्ट राष्ट्रवाद है तथा अन्य देशों अथवा राष्ट्रों को रौंद कर उसकी सिद्ध उन्हें अभिशप्त है। बंकिम अपने राष्ट्र के अभ्युत्थान और प्रगति के लिए संसार के अन्य राष्ट्रों का शोषण समझते हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता व समानता के प्रबल समर्थक रहे।

बंकिम चन्द्र की रचनाओं के सन्दर्भ में सुबोध चन्द्र ने लिखा है कि '' बंकिम चन्द्र एक महान सृजनशील कलाकार होने के साथ एक भारी विद्वान भी थे।''[5]

निष्कर्ष :– प्रस्तुत लेख बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा पाश्चात्य राष्ट्रवाद तथा भारतीय राष्ट्रवाद के मध्य वैचारिक असमानता प्रदर्शित कर 'माता भूमि प्रथिव्या ' में भारतीय राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का कार्य किया। लेख में बंकिम चन्द्र की साहित्यिक यात्रा का 'संवाद प्रभाकर' तथा 'संवाद साधु रंजन' से शुरूआत करना स्पष्ट किया गया है तथा प्रथम उपन्यास 'राजमोहनज वाइफ' का 'इंण्डियन फील्ड' में प्रकाशन को यथा विश्लेषित किया गया है। लेख में बंकिम के उपन्यास 'दुर्गेश नन्दिनी' 'कपाल कुण्डला' तथा मृणालिनी के प्रकाशन वर्ष को अंकित तथा स्पष्ट करते हुए बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की साहित्यिक समृद्धता को स्पष्ट किया गया है। लेख में बंकिम चन्द्र के राष्ट्रवाद द्वारा पाश्चात्य राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के समर्थक राजाराम मोहनराय के विचारों का अनुसमर्थन न करते हुए पाश्चात्य राष्ट्रवाद को अपने क्षुद्र, स्वार्थी हितों को संबर्द्धन करने वाला बताया है। जो अन्य राष्ट्रीय हितों की घोर उपेक्षा कर तथा अपने अधिकार में कर उनका हद दर्जे का शोषण किया । जिसे बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अक्षम्य माना। जबकि लेख के शीर्षक अनुरूप बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का राष्ट्रवाद नैतिक मूल्यों पर आधारित है।

शोधार्थी ने बंकिमचन्द्र के राष्ट्रवाद तथा पाश्चात्य राष्ट्रवाद में अन्तर स्पष्ट किया है। लेख अन्तर्गत साहित्यिक अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि बंकिम द्वारा पाश्चात्य राष्ट्रवाद को घोर स्वार्थी तथा शोषण आधारित बताकर भारतीय राष्ट्रवाद 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त का परिपालन करता है। जिसमें अद्भुत मानवता, राष्ट्रवादिता तथा नैतिकता समावेशित है।

महत्वपूर्ण शब्दाबली :– पाश्चात्य राष्ट्रवाद, ' माता भूमि पुत्रोऽहं प्रथिव्याः', नेहाटी, काटलपाड़ा, जिलाधीश, डिप्टी कलेक्टर, मिदनापुर, कलेजियट स्कूल, हुगली कालेज, कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रेसीडेन्सी कालेज, राजलक्ष्मी, संवाद प्रभाकर, संवाद साधुरंजन, राजमोहनज वाइफ, इंण्डियन फील्ड, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, मृणालिनी, नग्न, स्वार्थी, भारत कलंक।

———————————————————————————————————————

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. पृथ्वी सूक्त, अथर्ववेद, डा. कन्हैया लाल राजपुरोहित, पूर्व उद्घृत, पृष्ठ –7।
2. विष्णु पंराण प्रथम खण्ड, द्वितीय अंश अध्याय –3, डा. कन्हैयालाल राजपुरोहित पूर्व उद्घृत पृष्ठ –7,8 ।
3. आर. सी. मजूमदार : दि ब्रिटिश पैरामाउन्ट सी एण्ड इण्डियन रेनासां, भारतीय विद्या भवन बम्बई, 1695, खण्ड ,2, पृष्ठ –487 ।
4. बंकिम निबन्धावलि, पृष्ठ –82 ।
5. सुबोध चन्द्र , सेनगुप्त, बंकिम चन्द्र चटर्जी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1982 पृ. –7 ।